ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 325-327

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

उच्च शिक्षा और नैतिकताः पण्डित मदन मोहन मालवीय जी की परिदृष्य

डॉ0 विजय आनन्द

सहायक प्रोफेसर– समाजशास्त्र विभाग, किशोरी रमण (पी0 जी0) कालेज, मथुरा (उ0प्र0), भारत

Received-20.12.2022, Revised-24.12.2022, Accepted-29.12.2022 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांशः *मानव के सतत् समग्र, वहुमुखी विकास तथा उन्नति के शिखर तक पहुँचने के सशक्त उच्च शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य उदान्त और परिष्कृत मानवीय गुणों का विकास करना तथा नैतिक रूप से पुष्ट समाज की रचना करना है, जिससे नवाचार हो, जागरूकता हो तथा आत्मवोध हो। उत्कृष्ट सोच, कल्याणकारी परिकल्पना को उच्चस्तरीय प्रयोग द्वारा सिद्ध कर समुचित रूप से क्रियान्वित करना ही उच्च शिक्षा को सार्थकता प्रदान करता है। उच्च षिक्षा के द्वारा चिकित्सा, विज्ञान तकनीकी आदि का ऊँचे से ऊँचा गहन से गहनता ज्ञान पाया जा सकता है लेकिन नैतिक रूप से स्वस्थ मनुष्य ही उस ज्ञान का सही इस्तेमाल कर सकता है। अतः हमारी शिक्षा का उद्देश्य नैतिक रूप से सुदृढ़ नागरिकों का निर्माण होना चाहिए। ऐसे वैज्ञानिकों का विकास हो, ऐसे चिकित्सकों का सृजन हो, ऐसी औद्योगिक क्रान्ति हो जिसका आधार मानवीय गुण हो, संवेदनशीलता हो तथा उच्च शिक्षित व्यक्ति सच्चे अर्थ में मानव हो क्योंकि शिक्षा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य सही अर्थो में मानव का निर्माण करना ही है। अन्यथा उच्च षिक्षा के वर्वर दुष्परिणाम हिरोषिमा नागासाकी जैसे विध्वंस मानव अंगो के व्यापार जैसे कुकृत, मुम्बई, निठारी काण्ड या ट्रेड सेन्टर जैसे आतंक–विनास का महाताण्डव करते रहेंगे।*

कुंजीभूत शब्द– वहुमुखी विकास, सशक्त उच्च शिक्षा, पुष्ट समाज, नवाचार, आत्मवोध, कल्याणकारी परिकल्पना, तकनीकी।

उच्च शिक्षा की भारतीय दृष्टि इसमें महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है। उदान्त भाव एवं नैतिक मूल्यों से पुष्ट, मानसिक वौद्धिक मौखिक रूप से स्वस्थ मनुष्य एवं समाज की रचना की जा सकती है। भारत वर्ष में उच्च शिक्षा को भारतीय परावि़ज्ञान की दृष्टि सम्यक सम्वन्धित करते हुए विश्व कल्याण एवं राष्ट्रीय विकास हेतु नियोजित करना उपयुक्त होगा। शिक्षा का दीप्तिमान सूर्य अज्ञान के अन्धकार को प्रकाशमय, अशिव को शिवम तथा निषेध को स्वीकार्य वना सकता है। आवश्यकता है महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय जी जैसे उच्च शिक्षा की सार्थकता प्रदान करने वाले मनीशियों की जिससे मानवीय मूल्यों से सर्वाधिक शिक्षा का व्यवहारिक रूप विश्व कल्याण हेतु बन सके। जीवन का सर्वागीण विकास शिक्षा का मूलमंत्र हो, शिक्षा की ऐसी व्यवस्था हो कि विद्यार्थी अपनी शारीरिक मानसिक भावनात्मक शक्तियों का विकास कर आगे चलकर किसी व्यवसाय द्वारा सच्चाई और ईमानदारी से अपना जीवन निर्वाह कर सकें, कलापूर्ण सौर्न्दयमय जीवन व्यतीत कर सकें, समाज में आदरणीय और विश्वास पात्र वन सकें तथा देश भक्ति से जो मनुष्य को उच्चकोटि की सेवा करने के लिए प्रेरित करती है, और अपने जीवन को अलंकृत कर राष्ट्र की सेवा कर सके। महामना जी ऐसी ही सर्वांगीण षिक्षा के पक्षधर थे, जो सम्पूर्ण मानव वनाए। उन्होंने शिक्षा के उसी सर्वांगीण स्वरूप का विकास किया और जनकल्याण के लिए इसका प्रचार–प्रसार किया। पूर्णतया समर्थित महामना जी ने शिक्षा उद्यम नैतिकता आदर्श तथा पीढ़ियों के लिए जीवन भर प्रयास किया। मानवीय गुणों का निर्माण और आध्यात्मिक अनुशासन महामना मालवीय जी की शिक्षा अवधारणा के आधारभूत तव्व थे। उनका उद्देश्य विधार्थियों की प्रतिभा एवं रचनात्मक प्रवृतियों को प्रोत्साहन देना था ताकि वे सही अर्थों में अनुशासित व उत्तरदायी नागरिक बनकर देश के विकास में सार्थक भूमिका निभा सकें।

मालवीय जी ने शिक्षा के प्रचार–प्रसार और इसे नये स्वरूप प्रदान करने पर बल दिया, वे इसे सांस्कृतिक जागरण का प्रधान अंश मानते थे। राष्ट्रीय जागरण का प्रमुख साधन, मानव विकास का मूल मानते थे लेकिन उनकी परिकल्पना मात्र डिग्री प्राप्त करने तक नहीं, बल्कि व्यक्तित्व के सर्वागीण विकास के उद्देश्य निर्धारण हेतु व्यापक थी। इसकी बुनियाद समग्र व्यक्तित्व भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों पक्षों के विकास से प्रेरित थी। महामना की दृष्टि भारतीय परम्परा से ओंत–प्रोंत नैतिकता तथा धार्मिक आचरण, भावात्मक रूप से सुदृढ़ मानवीयता के प्रति आग्रह, बड़ों विद्वानों तथा गुरूजनों के प्रति आदर कला और सौन्दर्य के प्रति स्वाभाविक प्रवृति तथा देशभक्ति से ओंत–प्रोंत पीढ़ियों के निर्माण की थी।

पण्डित मदन मोहन मालवीय के अनुसार विद्यार्थियों को चरित्र गठन शिक्षा का प्राथमिक लक्ष्य है। वह उच्च स्तरीय शिक्षा की ऐसी व्यवस्था करना चाहते थे जिसके द्वारा भारतीय नवयुवकों में चरित्र का निर्माण हो, उनमें देश–प्रेम और देश–सेवा की भावना का संचार हो और भारतीय संस्कृति के प्रति उनकी निष्ठा बघ्ढ़े। उच्च शिक्षा अन्तर्राष्ट्रीयकरण का महत्वपूर्ण सेतु है, जहाँ राष्ट्रीयता का सम्बन्ध, राष्ट्र के प्रति कुर्बानी प्रेम और आत्मीयता के भाव से है। वहाँ अन्तर्राष्ट्रीय अववोध समूचे विश्व के प्रति वन्धुत्व, लगाव तथा तदीयत्व का परिसूचक है। शिक्षा की नीतियों, शैक्षिक पाठ्यक्रमों, शिक्षण विधियों तथा उच्च कोटि के शिक्षको के माध्यम से इन लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायता हो सकती है। इसलिए हमारे यहाँ शिक्षा नीति 1986 के तहत इन

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

मुद्वों पर पर्याप्त बल दिया गया है। तथा राष्ट्रीय एकता एवं अन्तर्राष्ट्रीय अववोध विकसित करने में शिक्षक की भूमिका की सराहना की गई है।

भारत में राष्ट्रीय एकता तथा अन्तर्राष्ट्रीय अववोध को बढ़ावा देने की दिशा में हमारी शिक्षा–प्रणाली को अन्य देशों की तुलना में अपनी प्राचीन गौरवपूर्ण अस्मिता एवं अपनी ख्याति को पुर्नजीवित करना होगा अपनी विशिष्ट पहचान कायम करनी होगी। निश्चय ही राष्ट्रीय एकता एवं अन्तर्राष्ट्रीय सदृभाव के क्षेत्र में परिमाणात्मक दृष्टि से सुधारात्मक परिवर्तन होगा। हमारी पीढ़ी नवीन भारतीय समाज की गरिमा के अनुकूल अपने आपसी सम्बन्धों में कड़वाहट की वजह मिठास तथा अलगाव के वजह ठोस लगाव कायम कर लेगी, इसमें कोई सन्देह नहीं। उच्च शिक्षा के विविध आयाम चाहे वह चिकित्सा के क्षेत्र में हो, प्रौद्योगिकी, अभियान्त्रिकी या अन्य कोई भी क्षेत्र हो यदि उसका मूल आधार नैतिकता है तो निश्चिय ही परिणाम कल्याण कारी होगे। संवेदनाएँ और भावनाएँ विनाश और विध्वंस में रक्षा कर सकेगी। इसमें हमारी भारतीय संस्कृति, भारतीय दर्शन अत्यन्त महत्वपूर्ण है इसलिए सत्य के मार्ग का अनुसरण करने वाला ही कल्याण मार्ग पर अग्रसर हो सकता है।

शिक्षकों का आचरण, तौर तरीके एवं जीवन मूल्य प्रत्यक्षता या परोक्षतः प्रभावित करते है। यह वात कोठारी आयोग से लेकर अब तक नई शिक्षा–नीति तक बार–बार दोहराई गई है। उच्च शिक्षा में गुणवत्ता, उदारता तथा नैतिकता के उत्थान के लिए आवश्यकता है कुशल, सुयोग्य, और अनुकरणीय अध्यापकों की । अतः सत्य का पथ–प्रदर्शक अध्यापक तथा उसके अनुयायी भावी कर्णधार सत्य के मार्ग का अनुसरण करके ही कल्याण मार्ग पर अग्रसर हो सकते है और वास्तविक उन्नति को प्राप्त कर सकते है। अतः उच्च शिक्षा में प्रजातान्त्रिक गुणों, मानवीय मूल्यों तथा सहिष्णुता, सेवा भाव, त्याग, अहिंसा और प्रेम जैसी उदान्त भावनाओं को विकसित करना होगा जरूरत है, केवल आशा के एक नन्हे से द्वीप जलाने की, मन में विश्वास जलाने की। अतः कौशलपूर्ण, उद्वेश्यपूर्ण परिष्कृत उच्च शिक्षा द्वारा इस समस्या का निदान खोजा जा सकता है। विभिन्न अनुसंधानों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव से जुड़े मानवीय मूल्यों, सहिष्णुता, त्याग, प्रेम, वन्धुत्व एवं सहयोग को विकसित कर इसमें अमूल्य योगदान दिया जा सकता है।

जहाँ एक तरफ वैश्वीकरण से औद्योगीकरण बढ़ने की संभावना बढ़ी है। वही दूसरी तरफ इसके परिणाम स्वरूप विकसित देशों से विकासशील देशों की तरफ प्रदूषण स्थानान्तरित होने की संभावना भी है। वैश्वीकरण के फलस्वरूप औद्योगिकरण में तीव्र गति से प्रगति के कारण औद्योगीकरण मानवीय आधारभूत सुविधाओं पर अतिरिक्त दबाव के रूप में सामने आ सकता है। औद्योगीकरण के साथ–साथ यातायात एवं संचार सुविधाओं का विकास, अन्य आधारभूत संरचना का विकास, शहरीकरण, कृषि विकास आदि होने लगा है। इन सबका प्रभाव वायु, जल, ध्वनि प्रदूषण, भूमि की गुणवत्ता में गिरावट, जंगलों तथा जैव विविधता आदि में कमी के रूप में परिलक्षित हुआ है। इन समस्याओं का निदान भी परिष्कृत उच्च शिक्षा द्वारा ही खोजा जा सकता है।

अतः शिक्षा द्वारा उनमें विश्व को परिवार समझकर परस्पर सहयोग एवं सद्भाव पूर्ण भावना के साथ जीवन व्यतीत करने की कुशलता एवं उसके लिए अपेक्षित अभिवृति एवं मूल्य विकसित करने होगे। इस दृष्टि से शिक्षा के पाठ्यक्रमों, शिक्षण–विधियों एवं शिक्षण–प्रणालियों की बड़ी तेजी से बदलाव होगा। शिक्षा के विभिन्न स्तर पर पढ़ाये जाने वाले विषयों में अन्तर्राष्ट्रीय मुद्वों एवं अन्य देशों से सम्बन्धित सूचनाओं को उपयुक्त रूप में प्रस्तुत करना अन्तर्राष्ट्रीय अवरोध के लिए अत्यावश्यक है।

वर्तमान तकनीकी एवं विज्ञान के युग में आज का मनुष्य अन्तरिक्ष में भ्रमण कर चुका है।,चाँद पर पूरी तरह से पाँव रख सका है, किन्तु इतनी उन्नति प्राप्त करने के बावजूद भी वह आपसी भेद–भाव नफरत, हिंसा एवं स्वार्थ के निर्मम कठोर पाष से अपने को मुक्त नहीं कर पा रहा है। उचित शिक्षा द्वारा हम इस गंभीरता को कम कर सकते है।मानवीय एकता के वाध क तत्वों के प्रभाव को नगण्य बना सकते है, राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ तथा अन्तर्राष्ट्रीयता की मूल बात यह है, कि यह एक भावना के परिसूचक है तथा इसके तहत व्यक्ति की मानसिकता, उसकी भावनात्मकता एवं स्वनात्मक अभिव्यक्ति को महत्वपूर्ण माना जाता है। अतः शिक्षक भी इसमें अहम् भूमिका हो जाती है, उसे सुनिश्चित करना होगा कि उत्तम लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए उच्च–शिक्षा का स्वरूप, उसका कलेवर, कार्यविधि, उसमें निहित भावना उदात्त परिष्कृत हो तथा सतत् विकसित हो। उच्च–शिक्षा उन्नत या विकसित होन का तात्पर्य उसकी परिणति, विनाश या विध्वंश नहीं है।

शिक्षा द्वारा देश में कृषक, वैज्ञानिक एवं औद्योगिक क्रान्ति का सूत्रपात करने वाले युग के महानतम् शिक्षाविद् महामना मालवीय जी भी शिक्षा को मानव विकास का मूल मानते थे उन्होने इसके लिए अनुपम योगदान दिया। आधुनिक पद्धति एवं साधनों का पूरा उपयोग किया। उनका अखिल भारतीय विश्वविद्यालय युवकों का पथ प्रदर्शक है। वास्तव में वे इन सब विषयों के प्राचीन भारतीय और अर्वाचीन पाश्चात्य विद्वानों के विचारों का तुलनात्मक एवं समन्वयात्मक अध्ययन आवश्यक समझते थे।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

वे विश्व विज्ञान का अमन्वय तथा विश्व के विद्वानों के सहयोगात्मक प्रयासों को मानव उन्नति के लिए आवश्यक समझते थे।

उच्च शिक्षा ने मानवीय प्रदूषण को बढाया है जिसका निराकरण अन्तर्मन के शुद्धिकरण से ही संभव है। खुली आंखों से भी न देख पाने की विकलांगता, पक्षपार्त्र जैसे पक्षाघात, समझते हुए भी न सोच पाने की असमर्थता व्यक्ति को पतन की गहराई में फेंक रही है। इस स्थिति में उभारने के लिए उच्च शिक्षा में नैतिकता ही एक मात्र अवलम्ब है जो मानवीय गुणों को परिष्कृत कर मानव से मानव के अतरंग तादाम्य को राष्ट्र के प्रति समर्पण तथा अन्तर्राष्ट्रीय अवरोध को विकसित कर वसुधैव कुटुम्बकम् के स्वंय को साकार कर सकती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. महामना के विचार एक वचन काशी हिन्दू विश्व विद्यालय (दीक्षान्त भाषण) अवधेश प्रधान, पृष्ठ 63.
2. काशी हिन्दू विश्व विद्यालय के संस्थापक – डा. विश्व नाथ पाण्डेय (2006), पृ. 20,21.
3. इकोनॉमिक सर्वे, गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया, 1996 , 97, पृ0 136,137.
4. महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय जी का विद्यार्थियों के लिए सन्देशः सम्पादक डा0 विश्वनाथ पाण्डेय , पृ0 3,19.

*****